मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख - सलंग अंक १७५ - फरवरी-२०२२

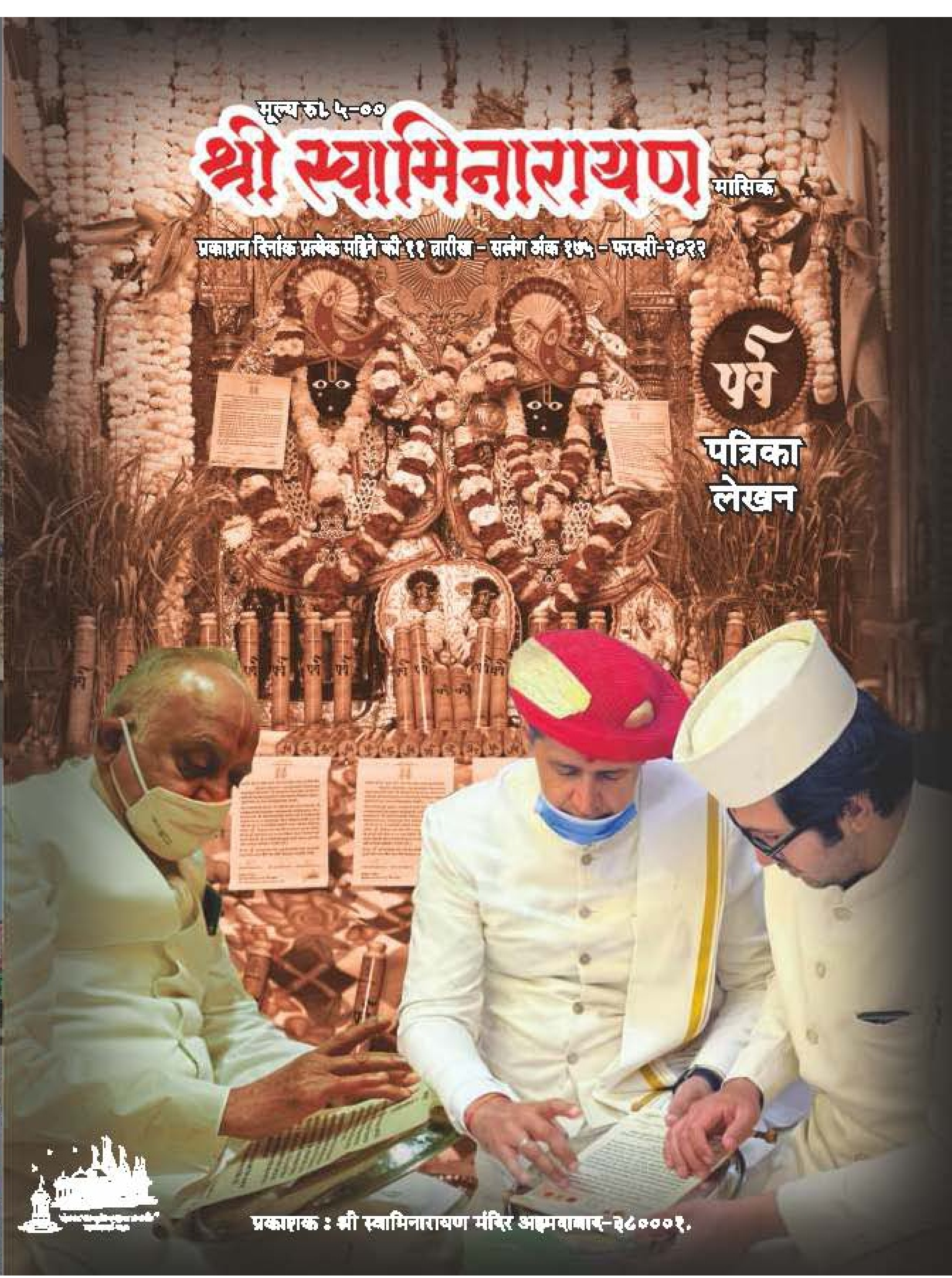

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

॥ શ્રી હરિ વિજયતે ॥

॥ નિમંત્રણમ્ ॥

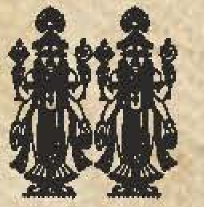

સ્વસ્તિ શ્રી દેશ દેશના ત્યાગી ગૃહી બાઈ-ભાઈ સમસ્ત સત્સંગી જોગ શ્રીનગર-અમદાવાદ મહાશુભસ્થાને બિરાજમાન ભરતખંડના અધિષ્ઠાતા શ્રી નરનારાયણ ભગવાનના ચરણકમળ સમીપથી શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠસ્થાનથી લિખિતંગ ધર્મકુળના શુભાશિર્વાદ સહ જય સ્વામિનારાયણ વાંચશો।

જત જણાવવાનું કે અમારા ઘણા અને આપણાં ઇષ્ટદેવ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે સંપ્રદાયમાં સર્વપ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર અમદાવાદમાં શ્રી નરનારાયણદેવની પ્રતિષ્ઠા કરી તે કલ્યાણકારી પ્રસંગને વિ.સં. ૨૦૭૮ ફાલ્ગુન સુદિ ત્રીજ શનિવારના દિવસે ૨૦૦ વર્ષ પૂર્ણ થઇ રહ્યા છે। તે અવસરને સંભારી રાખવા ભુવનના સંભારણા સમાન **પર્વ** વિ.સં.૨૦૭૮ના મહા વદિ ૧૧ તા.૨૭-૨-૨૦૨૨ને રવિવાર થી ફાલ્ગુન સુદિ ત્રીજ તા.૫-૩-૨૦૨૨ શનિવાર પર્યન્ત ઉજવાશે તેમાં આપણે હરિભક્તો ભેગા મળીને શ્રીજી મહારાજને પ્રસન્ન કરવા સેવા અને સત્સંગના અનેકાનેક ઉપાયો કરશો।

તો આ **પર્વ** નો સહભાગી થવા તન-મન-ધનથી સેવા-સત્સંગનો લ્હાવો લેવા આપ સૌને હેતે કરીને નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ।

આચાર્ય મહારાજશ્રી સાહેબ   મોટા મહારાજશ્રી સાહેબ   લાલજી મહારાજશ્રી સાહેબ

ધર્મકુળ પરિવાર
શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠસ્થાન
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ કેન્દ્ર

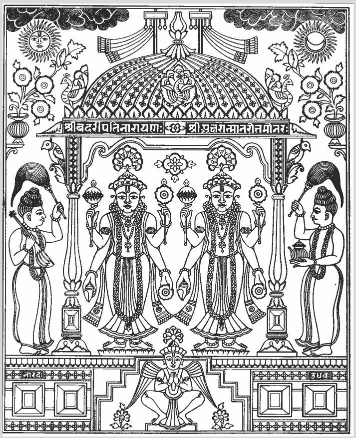

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १७५ ● फरवरी-२०२२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	पर्व कार्यक्रम	०५
०३.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०४.	दान – दक्षिणा	०८
०५.	श्रीहरि के वंशज के मुख से अमृतवचन	१०
०६.	कडी	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	भक्ति सुधा	१५
०९.	सत्संग समाचार	१७

अस्मदीयम्

वसंत ऋतु के आगमन के साथ मानव ह्रदय के अंदर उत्साह और आनंद की लहर आ जाती है । चाहे सामाजिक कार्य हो, या धार्मिक कार्य हो या बड़े-बड़े त्योहार, उत्सव और पर्व आये हो । सूर्य का उत्तरायण में आने से ही शुभ घडी एवम् मुहूर्त की कतार लग जाती है । इस में से एक राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस और ज्ञान का महापर्व वसंत पंचमी, सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के मुख से कहे गये । संसार के जीवो के हित हेतु सर्वजीव हितकारी अपौरुषेय अमृतवाणी श्री शिक्षापत्री सभी शास्त्रोके ज्ञान के भंडार का पृथ्वी पर प्रकाशित किया गया । उसी प्रकार मोक्ष का आधार (अवलम्ब) महामंदिर में सर्वश्रेष्ठ और पृथ्वी पर सर्वप्रथम परमात्मा के खुशी अनुसार निर्मित किया गया शिखर बद्ध महामंदिर में अपना ही स्वरुप ऐसे सर्वोपरी भगवान श्री नरनारायण दिव्य स्वरुप को स्थापित किये है । वह समय २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहा है । इस महाप्रव की तैयारी अवरित उत्साहपूर्वक चल रही है । जिसका दर्शन ध्वज वंदन के साथ राष्ट्रीय दिवस के उत्सव में पूर्ण हुआ । अब पूर्ण पर्व का दर्शन हो । उसके लिये हम सभी तन, मन, धन से सेवा में और भजन-भक्ति में जुडकर अपने आराध्यदेव की आराधना करके उनकी सम्पूर्ण कृपा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करे । यही हम सब को करना है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

पर्व कार्यक्रम

ता. २७-०२-२०२२, रविवार, माघ वद-११/१२

७:३०	चार वेद की पूजा (कालुपुर मंदिर)
८:३०	पोथीयात्रा
९:००	उत्सव स्थल का उद्घाटन
९:३०	मंदिर की आरती उत्सव स्थल पर
९:४०	सभा मंडप प्रवेश
१०:००	पोथी पूजन
१०:०० से ११:००	कथा
११:०० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
१२:००	वी.आर. और प्रदर्शन का उद्घाटन
२:०० से ३:००	कोविड जागृति, स्वास्थ्य मार्गदर्शन तथा और्गेनिक खेती और हस्तकला का उद्घाटन
३:३० से ५:००	कथा
५:०० से ६:३०	विशेष कार्यक्रम
७:००	साबरमती मैया की समूह आरती श्री नरनारायणदेव जन्म स्थान नारणघाट
८:३० से ११:००	सांस्कृतिक कार्यक्रम पद्मश्री भिखुदान गढवी और गीताबेन रबारी

ता. २८-०२-२०२२, सोमवार, माघ वद-१३

९:०० से १०:३०	कथा
१०:३० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
२:०० से ३:००	मेडीटेशन तथा हेरिटेज कार्यक्रम
३:३० से ५:००	कथा
५:०० से ६:३०	विशे, कार्यक्रम
८:३० से १०:३०	सांस्कृतिक कार्यक्रम

ता. ०१-०३-२०२२, मंगलवार, माघ वद-१४

७:३० से ९:००	महापूजा
९:०० से १०:३०	कथा
१०:३० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
२:०० से ३:००	आर्गेनिक खेती के विषय में मार्गदर्शन
३:३० से ५:००	कथा
५:०० से ६:३०	विशेष कार्यक्रम
८:३० से १०:३०	ड्रोन शो, लाईट शो और आदित्य गढवी, भौमिक शाह द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

ता. ०२-०३-२०२२, बुधवार, माघ वद-३०

७:३० से ९:००	महापूजा
९:०० से १०:३०	कथा
१०:३० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
२:०० से ३:००	महिला मंच
३:३० से ५:००	कथा
५:००	यज्ञ के यजमानो के शरीर की शुद्धिकरण
५:०० से ६:३०	विशेष कार्यक्रम
८:३० से १०:३०	सांस्कृतिक कार्यक्रम किंजल दवे

ता. ०३-०३-२०२२, गुरुवार, फाल्गुन सुद-१

९:०० से ११:००	यज्ञ
९:०० से १०:३०	कथा
१०:३० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
२:०० से ३:००	पर्यावरण के बार में समझाना
३:३० से ५:००	कथा
४:०० से ६:००	यज्ञ
५:०० से ६:३०	विशेष कार्यक्रम
८:३० से १०:३०	सांस्कृतिक कार्यक्रम कैलास खेर

ता. ०४-०३-२०२२, शुक्रवार, फाल्गुन सुद-२

९:०० से ११:००	यज्ञ
९:०० से १०:३०	कथा
१०:३० से ११:००	धर्मकुल पूजन, संत पूजन तथा सांख्ययोगी बहनो का पूजन
११:०० से १२:००	विशेष कार्यक्रम
२:०० से ३:००	मेन्टल हेल्थ के विषय में डॉ. अजीत सोहानी
३:३० से ५:००	कथा
४:०० से ६:००	यज्ञ
५:०० से ६:३०	विशेष कार्यक्रम, दाताओ को सन्मान, श्री नरनारायणदेव की सुवर्णतुला
८:३० से १०:३०	सांस्कृतिक कार्यक्रम फाल्गुनी पाठक

ता. ०५-०३-२०२२, शनिवार, फाल्गुन सुद-३

६:३० से ७:१५	श्री नरनारायणदेव का अभिषेक
७:१५ से ७:३०	निज मंदिर की समूह आरती
७:४५	वेद पाठकी पूर्ति
९:०० से ९:३०	कथा पूर्णाहुति
९:३० से ११:००	विशेष अतिथी का सन्मान
११:०० से १२:००	श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप का आशीर्वाद वचन
३:०० से ४:००	स्वयं सेवक सन्मान

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जनवरी-२०२२)

२६ पर्व महोत्सव के स्थल पर अपने शुभ उपस्थिति में गणतंत्र दिवस पर ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में विशाल राष्ट्रध्वज शोभायात्रा, संत-हरिभक्तो के विशाल समुदाय के साथ उत्साह पूर्वक किया गया।

२८ संत महादीक्षा आपके कर कमलो द्वारा पूर्ण किये।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जनवरी-२०२२)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर आदि मंदिरो द्वारा आयोजित शाकोत्सव के अवसर पर आगमन - नरोडा।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा शाकोत्सव के अवसर पर आगमन।

९ शेर (ता. विरमगाम) गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर आगमन।

२६ गणतंत्र दिवस के अवसर पर ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में अध्यक्ष स्थान पर राष्ट्रध्वज के साथ शौर्य यात्रा, जमीयतपुरा पर्व महोत्सव के स्थल पर उत्साह पूर्वक मनाया गया था।

दान - दक्षिणा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

दान और दक्षिणा मे अधिक अन्तर होता है। प्रायः लोग दान-दक्षिणा शब्द का प्रयोग प्रत्येक के साथ करते है। दान अर्थात् जब कोई पुण्य अवसर तीर्थयात्रा अवसर कोई ब्राह्मण-साधु-अतिथि-अभ्यागत इत्यादि को धन पदार्थ यथा शक्ति - यथा श्रध्धा योग्य समय दिया जाय तो उसे दान कहा जाता है। दान पवित्र सुपात्र को देने पर अतिशय श्रेष्ठ अपने कल्याणकारी कार्य को करके दे तो अथवा धन शुद्धि के रुप में दे तो उसे दान कहा जाता है।

दान और दया दान में अंतर होता है। दान सुपात्र को (ब्राह्मण-साधु-अतिथि-अभ्यागत) दिया जाता है। और दयादान किसी भी जरुरतमंत मानव हो या पशु-प्राणी-पक्षी-कीट पतंग की दयाजनक अवस्था को देखकर पालन पोषण सहायता दी जाये। वह दयादान कहलाता है। इसमें कोई योग्य अयोग्य - सुपात्र, कृपापात्र ज्ञाति, पाँति-कुल-धर्म-कर्म-शक्त, अशक्त जैसे गुण नही देखे जाते है। उनकी स्थिति तथा शक्ति समय संयोग देखकर मन में दया पैदा हो जाती है। इसमें धन, वस्त्र, बर्तन, भोजन जो कुछ भी दिया जाता है। उसे दयादान की संज्ञा दी जाती है। हमारे धर्मशास्त्रो के सिद्धान्तनुसार दान तथा दयादान करने वाले को कई गुणा फल भगवान देते है। वह जीव सुखी हो जाता है। मनुष्य को सभी जीवो पर दया करना चाहिए। उसे मानव धर्म कहते है। क्योकि ये लोग देहधारी मनुष्य पर आधारित है। ग्रन्थ जीव-प्राणी को आपतकाल-कष्ट में से दूर करे। यह मानव का कर्म है। संसार के सभी जीवन जन्तु को बन्धुत्व की भावना से देखना मानव धर्म कहा जाता है। दयादान शत्रुमित्र मे भेद नही करता है। विपत्ति के समय अपनी शक्ति के अनुसार उनकी रक्षा करना चाहिए। दीन-दुःखी पीडित समझकर दया करना ही दयादान कहा जाता है।

दान करना हो तो संकल्प करने के बाद दे सकते है। इसके तीन प्रकार है।

(१) योग्य देश, योग्य काल और योग्य पात्र के लिये प्रतिउपकार की अपेक्षा बिना निस्वार्थ भाव से दी जाये। उसे सात्विक दान कहते है।

(२) क्लेशपूर्वक : प्रति उपकार की अपेक्षा से किसी फल की लालच रखकर तो उसे राजसदान कहा जाता है।

(३) सत्कार्य बगैर, तिरस्कार पूर्वक अयोग्य देश काल में कुपात्र को दिये दान की तमस दान कहते है। इन तीनो में सात्विक दान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने श्रीमद् सत्संगी जीवन ग्रंथ में दान ग्रहण करने की विधि भी बताये है। प्राणियो पर हिंसा करने वाला, तेल निकालने वाला, शराब बेचने वाला, वैश्यावृत्ति करने वाला और धर्म विहीन राजा इन पाँच के पास से दान नही लेना चाहिए। उसी प्रकार काला लोहा, काला-सफेद तिल, भैंस, तेल, नमक तिल घेनु और मणि इन सातो का दान स्वीकारना अतिशय भयानक होता है।

दक्षिणा किसे कहा जाता है। जो हम प्रतिदिन, शुभ अवसर पर, धार्मिक व्यवहार में पुष्पकाल में जय-तप-होम-हवन-अनुष्ठान-पाठ-पुनश्चरण विछे विधान आदि सत्कर्म करने के लिये। किसी विद्वान पंडित पुरोहित ब्राह्मण के पास से उसके द्वारा जो सत्कार्य०अल्पकालीन या दीर्धकालीन, हाथ में नाडाछडी बाँधना, संकल्प करके सत्कार्य जैसे शास्त्र

नियम का पाठ पूजा-होम हवन सत्कर्म के पुण्य फल ये । उस पंडित पुरोहित को खुश करने के लिये तथा ऋण मुक्ति अथवा श्रम के फल के रुप मे वेतन जो दिया जाता है। उसे दक्षिणा कहा जाता है। जिसका जितना कर्म होता है। उस में वह पुरुषार्थ किये रहता है। परिश्रम के अनुसार उसकी योग्य धन सम्पत्ति दिया जाये । उसे दक्षिणा कहते है । कठोपनिषद में एक कथा आती है । जिसमें पिता उदालक और नचिकेता का संवाद है । पिता उदालक ब्राह्मण के पास से श्रेष्ठ यज्ञ कराये थे । दक्षिणा देते समय उनके पास जो वृद्ध और अशक्त जो गायें थी । उन गायो को दक्षिणा में दिये थे । अयोग्य दक्षिणा देने के कारण लोक तथा शास्त्रो ब्राह्मणो को परिश्रम के आधार पर दक्षिणा देना चाहिए। इस से ही सार्थक फल प्राप्त होता है।

दक्षिणा को उधार नही रखना चाहिए । क्योकि कार्य पूर्ण होने के बाद जो बीच में रात बीत जाती है। दो गुना दक्षिणा देना पडता है । जप-तप-विधि-विधान में दक्षिणा की मात्रा पूर्व निर्धारित करने में कोई नियम नही लागू पडता है । यजमान यदि ब्राह्मण को दक्षिणा देकर खुश नही कर सकता तो उसे यथार्थ फल नही मिलता है।

श्रीमद् भागवत के तीसरे स्कंध में कथा है । कि स्वप्रभु मनु को शतरुणा राजी से आकृति-देवहुति और प्रसुति नाम की तीन कन्या हुई । और उत्तरायण प्रियवर्त नाम के दो पुत्र हुए । उसमें से आकृति नाम की पुत्री ने रुचि नाम के पत्नी आकृति को यज्ञपुरुष परब्रह्म परमात्मा का ध्यान करके एक कुंड बनाकर आहुति समिधा सहित भगवान श्री विष्णु के बीचमंत्र के द्वारा दीर्ध काल तक होम करते रहे। ऋषि के पूजा प्रार्थना के प्रभाव से साक्षात् भगवान यज्ञ स्रुप औऱ लक्ष्मी के अंश से दक्षिणा स्त्री रुप में प्रगट हुए । तब रुचि ऋषि लग्न के पूर्व पुत्रिका धर्म के वचन से अर्थात् मनुराजा ने पुत्री दान करते समय वचन माँगे थे । कि हमारे पुत्री के द्वारा पुत्र का जन्म होगा तो मुझे देना । उस वचन से बंध गये थे । रुचि ऋषि यज्ञ भगवान पुत्र रत्न और दक्षिणा नाम की पुत्री अपने पास रखकर स्वयं मनु अथवा ससुर को दे दिये । इसके बाद यज्ञ भगवान और लक्ष्मीरुप दक्षिणा की शादी किये । उसी समय से यज्ञ, होम, हवन, जप, तप, पाठ, पुनश्चरणं में यज्ञ भगवान की सुशी के लिये धन रुपी दक्षिणा का संयोग अर्थात् मिलन युगल स्वरुप की स्थापना के प्रतीक रुप मे यजमान की तरफ से दक्षिणा को और पंडित की तरफ से यज्ञ स्वरुप भगवान का आदान प्रदान करके अपनी पूजा में करते है। विना दक्षिणा दिये पाठ-पूजा- का फल नही मिलता है । यज्ञ नारायण और दक्षिणादेवी के संयोग इस सत्कर्म हेतु पूजा और दक्षिणा के रुप में करते है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री श्लोक १४७ में कहे है कि । ''गृहस्थ आश्रम से अपनी आमदनी का दशांश भाग या विसवा भाग श्री कृष्णौ को अर्पण कर देना चाहिए ।'' यहाँ पर समर्पण का भाव श्रीहरिने कहा है । श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित मंदिरो में देव के चरण में समर्पित किया जाये । उसे धर्मादा कहा जाये । लेकिन मेरा मंदिर में इतना सहयोग है । इस प्रकार के संकल्प से धन छोडने की भावना व्यक्त नही होती है। धन की ममता का त्याग नही कहा जायेगा । जब तक ममत्व त्याग न हो तो उस धन को समर्पित नही किया जा सकता है । लेकिन जब ''तेरा तुझको अर्पण'' करने पर वस्तु लौकिक नही रह जाती है। यह भक्ति का रुप बन जाता है । ऐसी निष्काम भक्ति भवत के लिये कल्याणकारी हो जाती है। श्रीहरि ऐसे दानी को अपने अक्षरधाम में पार्षद की कतार में रख देते है। वे पदार्थ और भक्त दिव्य रुप के हो जाते है । अर्थादान दक्षिणा या दयादान भगवान को समर्पण करके भक्त और मोक्ष कल्याण के निमित्त बन जाते है।

श्रीहरि के वंशज के मुरव से अमृतवचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

अह्मदाबाद पूर्व क्षेत्र में मंदिरो के संयुक्त भागीदारी से शाकोत्सव के अवसर पर ता. ०२-०१-२०२२ : शाकोत्सव हो या पाटोत्सव, बहुत कम ही ऐसा अवसर आता है कि, सम्पूर्ण पूर्व क्षेत्र के हरिभक्त इस प्रकार एक स्थान पर बडी संख्या में इकट्ठे हुए है। यह हम सब के लिये गौरव की बात है। हमारे आराध्यदेव एक है। अपना सिद्धान्त एक है। ऐसा उत्सव और समैया हम लोग जो मना रहे है। वे नरनारायणदेव एक है। महाराज चबूतरे पर खडे रहकर महिमा कहे है। हमारे तथा इस नरनारायणदेव में कोई अन्तर नही माने। नरनारायणदेव अपने मध्य में है। और साक्षात् है। बद्रिकाश्रम में रहकर केवल हम लोगो के लिये तपस्या करे रहे है।

महाराजजी गद्दी पर जब बिराजमान हुए। उस समय गुरु रामानंद स्वामी से तीन वरदान मागे। प्रथम वरदान में माँगे कि हमारे भक्त अर्थात् क्या ? इस शब्द को समझना आवश्यक है। मेरा अर्थात् ऐसा हरिभक्त जो शिक्षापत्री के मर्यादा का पालन करता हो। जो सिद्धान्त का पालन करता है। वह कभी भी अन्न, धन, वस्तु से दुखी नही होता है। महाराज और नंद संत गाँव-गाँव में घुमकर परिस्थिति का सच्चा निर्माण किये। तभी तो हम लोग कितने सुखी है। हमलोगो के पास ए.सी. है। गाडी है मकान सब कुछ है। हम लोगो को मात्र यह करना है कि नरनारायणदेव के होकर रहे। इसके अलावा छुटकारा भी नही है।

इस तरह के सत्संगी थोडे भोले है। कई लोग आकर भ्रम में लायेगे। मीठे बोलने वाले कई होते है। सत्य बोलने वाले कम है। सिद्धान्त से जुडकर रहे यह कोई मेरा आदेश नही है। महाराज की आज्ञा है। स्वामिनारायण भगवान ने संविधान में कहे है। आचार्य महाराजश्री जीने मूर्ति की प्रतिष्ठा किये है। वही मूर्ति सम्प्रदाय में मान्य होगी। उसी प्रकार आचार्य महाराजश्री ने जिन संतो को दीक्षा दी है। वही संत स्वामिनारायण संत कहे जायेगे। दूसरे तो विमुख कहे जायेगे। भगवा कपडे में पावर नही होता। पावर नरनारायणदेव का है ? दूसरा कोई सिद्धान्त बताये। वह सत्य नही है। हमें सत्य के साथ मिलकर रहना है।

हरिभक्तो के इस समुदाय में परस्पर एकता रखकर नरनारयणदेव से जुड कर रहना चाहिए। क्योकि हम सब एक परिवार के सदस्य है। हम सब के बाप नरनारायणदेव है। यह समझ आ जाना चाहिए। नया वर्ष आ गया है। वास्तव में बदला कि नही इस समय देव की स्थिति कठिन समय में व्यतीत हो रहा है। इसमें रक्षा भगवान कर रहे है। वर्तमान समय में सावधानी रखना है। सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक मंदिर में कार्यक्रम हो रहा है। इसी प्रकार पर्व भी मनाया जायेगा। सभी परिवार पर्व में अवश्य आये। यहाँ के युवक, बहनो, वृद्धो का सहयोग उत्सव में अच्छा रहा है। विजय स्तम्भ की स्थापना के समय वोले थे समैया। और उत्सव तो किये है। लेकिन पर्व आज तक नही किया गया है। यह उत्सव जीवनमें सबसे बडा आ रहा है। यह अवसर बार-बार नही आता है। ता. २७-२-२०२२ से ५-३-२०२२ को ध्यान देकर पर्व मनाये और तन, मन, धन से सेवा करे।

इस प्रसंग में छोटा-बडा योगदान दिये है। रोटी बनाये हो। प्रकाश लगाये हो। पार्किग में सेवा दिये हो। सभी को महाराज सुखी करे। परिवार वालो का स्वास्थ्य अच्छा रहे। दिन-प्रतिदिन नरनारायणदेव की महिमा बढती रहे। ऐसे श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

यहाँ पर उल्लेखनीय है कि महानव्यक्ति मर्म को बताकर मात्र दिशा निर्देश देते है। लेकिन हम लोग इस

कलियुग में अपनी जीवात्मा को कल्याण हेतु अत्यधिक सावधानी पूर्वक कृत्य करना चाहिए । वर्तमान समय हमें ऐसे भगवाधारी संत मिलेगे तो अपने देश के आचार्य से दीक्षा भी लिये रहते है । लेकिन श्रीहरि के द्वारा देश विभाग के मर्यादा के बाहर, आचार्यश्री के मार्गदर्शन बिना भगवान के स्वरुप देव, आचार्य और शिक्षापत्री को पहचाने बिना अपने तरीके से समाज को सुधारने के लिये स्वामिनारायण नाम से समाज सुधारक और संसार के साधु बन गये है। अपने स्वयं ट्रस्टी बनकर सर्वे - सर्वावन गये है । आचरण के आडंबर से और प्यारी वाणी से आकर्षित करते है । संसार के लोगो के दु:नी नस की पहचान उनहे हो गई है । इस लिये अपने हित में यह है कि अपने देश और धर्मकुल के मंदिर के पू. महंतश्री से पूछकर सहमति लेना चाहिए न कहने पर नही जाना चाहिए । यह अपने हित में है।

भारत वर्ष के गणतंत्रात्मक दिन के पर्व के उपलक्ष में (स्थल, पर्व महामहोत्सव का मैदान २६-१-२०२२)

प.पू. महाराजश्री : इ.स. १९५० में अपने देश का संविधान लागू हुआ । उसी दिन से गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। देश का संविधान हमे रहने, कर्म सुधारने के लिये है । जैसे देश का संविधान है । उसी प्रकार अपने सम्प्रदाय का भी सविधान है । यह देश, विभाग का लेख है । जिस में महाराजने सम्प्रदाय के हित हेतु आज्ञा को समावेश किये है । इस लेख का अभी तक यदि आप नही पढे है । तो ले जाकर अवश्य पढे । न हो तो बताये हम आप को देगे । बाद में तिलक लगाना सफल होगा । हल्ले के पानी में तैरना और समूह में रहना अच्छा होता है । और यह सर्वोत्तम भी है।

अ.नि. पंडित जसराजजी के परम शिष्य श्री निरवभाई अति सुंदर गीत गाते है । इनकी इस कला का लाभ हम लोग ''पर्व'' के टाईटल सांग में कर रहे है । पू. बापजी के रजत-स्वर्ण जयंती से बचे धन से छपैया मुख्य मंदिर का निर्माण किया गाय । उसी प्रकार पर्व महोत्सव में जो धन बचेगा । उसका उपयोग छपैया के पूर्ण उद्धार हेतु किया जायेगा । जिसका अनुमानित खर्च १५२ करोड जितना है । भगवान जैसे भगावन बैठे है । कोई कार्य रुकता नही है । अपने हिस्से में नरनारयणदेव और महाराज की जन्मभूमि आयी है । इससे अधिक कुछ नही है।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज गणतंत्र दिवस के अवसर पर पर्व के उपलक्ष्य में देस भक्ति युक्त इतना बडा कार्यक्रम हुआ है । इसका उद्देश्य यह है कि अपने सत्संगि अच्छे नागरिक तथा देश भक्त बने । क्योकि भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव अपने उनके आश्रित है । हम अपने समैया और उत्सव में राष्ट्र भक्ति का कार्यक्रम करते ही रहते है । इस में सैनिक, सीमा, सुरक्षादल, C.R.P.F. तथा R.A.F. के जवान राष्ट्र के लिये अपने प्राण की आहुती देने वाले शहीदो, कोरोना काल में पुलिस के लोगो को रहने-भोजन तथा आइसोलेशन की व्यवस्था करते है । इससे राष्ट्र भावना का विकास होता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री : इस भूमि पर जब पैर रखते है । एक दिव्य तरंग का अनुभव होता है । हम लोग कहते है । इस जगह का चयन हमने किया है । लेकिन वास्तव में इस भूमि का चयन महाराज स्वयं किये है । महाराज का उद्देश्य करोडो लोगो के कल्याण का है । इस पर्व का दर्शन (ग्राउन्ड) बाहर से भी करेगा । उसका कल्याण हो जायेगा । महामहोत्सव की जानकारी नरनारायणदेव ने सौंपा है । महाराजने वचनामृत में कहे है कि उत्सव तुलसी पत्र से या लाखो के खर्च से ही वह नरनारायण की ईच्छानुसार ही होता है । नीरजभाई को सहृदय अत्यंत भाव से शीर्षक गीत गाये है । उन्हे अत्याधिक धन्यवाद । उत्सव अत्यंत दिव्य रुप से हो । इसके लिये महाराज के चरणो को वंदन हो ।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

कडी

संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटा २३ मिनट
- अमहादाबाद हवाई अड्डा से १ घंटा २ मिनट

उत्तर गुजरात में अर्थात् दंढाव्य प्रदेश में स्थित ऐतिहासिक महान कडी शहर में भगवान श्री स्वामिनारायण अपने संतो, पार्षदो तथा अपने आश्रितो के साथ बार-बार आये थे। और कडी नगर में निवास करने वाले भक्तजनो को मनोरथ पूर्ण करके मोक्ष का भागी बनाये है। साथ ही साथ अपने चरणो से अंकित उस धरा को पवित्र किये है। कडी मेहसाणा जिले की एक तहसील है। अहमदाबाद से रेल्वे द्वारा तथा एस.टी. बस द्वारा कडी जाते है। वर्तमान में कडी विकास कर रहा है। तथा कुंडाल गाँव की समानता कर रहा है।

श्रीहरि ने कडी के कालाब में पानी हमेशा भरा रहे ऐसा वरदान दिये थे।

एक बार भक्तवत्सल भगवान श्रीहरि संत, पार्षद तथा काठी घुडसवारो के साथ दंढाव्य देश में धुमते हुए कुंडाल गाँव में पधारे थे। कुंडाल गाँव में कला भक्त तथा अन्य भक्तोने मनोरथ को पूर्ण करके नगर के विशाल सरोवर पर आये थे। इसके बाद अपने पार्षदो तथा हरिभक्तो सहित सरोवर के किनारे बिराजमान हुए। भावसार भक्तो से कपडा घुलने के कष्ट को पूछे थे। हे भक्तजन तालाब में पानी क्यो नही रहता है? उसका कारण मुझे बताओ। इस प्रकार भगावन के पूछनेप र लोग उस वृत्तांत को बताये

। हे दयालु प्रभु ! इस कडी नगर कोई चारण जाति की पतिव्रता औरत रहती थी । वह स्त्री व्रत-उत्सव पूर्ण निष्ठा के साथ करती है । तथा अभक्ष्य वस्तु नही खाती है । वह एक पवित्र स्त्री थी । जब सरोवर की खुदाई चल रही थी । उस में से कोई एक कामी पुरुष उस स्त्री को रुप को देखकर मोहित हो गया था । उसके पास आकर बोला है रुपवती ! अनेक पक्षीयो के कलरववाला तथा निर्मल जलवाला तथा रमणीय वातावरण में इस सरोवर में मेरे साथ रमण करो । हे अबला ! यह विशाल सरोवर भी तुम्हारी जैसी स्त्रियो के साथ रमण के लिये ही किया गया है । वह पुण्य के लिये नही खुदवाया गया है । कामी पुरुष की इस बात को सुनकर पतिव्रता चारण स्त्री क्रोधित होकर बोली ! हे दुष्ट पुरुष ! ऐसे खराब वचन जिस उद्देश्य से कह रहे हो । इस सरोवर में अब जल नही रहेगा । तुमको नरक का भागीदार बनना पडेगा । हे मूर्ख ! यह मेरी वाणी सत्य होगी । कभी असत्य नहीं होगी । वह श्राप देकर अपनी घर पर आ गयी । हे प्रभु तब से आज तक इस तालाब में जल नही रहता है । यह सुनकर श्रीहरि भक्तो से बोले । हे प्रिय भक्तो ! मेरे बचन से यह सरोवर आज से जलमय हो जायेगा । आप अपना वस्त्र रंगे आरधुले । इसमें कोई संदेह नही रहे ।

परमकृपालु परमात्मा भगवान श्रीहरि जिस दिन यह बात बोले विना वर्षा के हरिकृष्ण से जलाशय जल से पूर्ण हो गया । ऐसा आश्चर्य देखकर सभी भक्तजन खुश हो गये । इसके बाद भगवान श्रीहरि, संतो, पार्षदो के साथ चुंवाल देश की तरफ प्रयाण किये ।

इस तरह अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण चरण से स्पर्शित होकर पवित्र हो गया । इस सरोवर के किनारे श्रीहरि की छत्री बना कर रखी गई है ।

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची - जनवरी-२०२२

दि. ०२-०१-२०२२	(प्रात) प.पू. स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से प.भ. शारदाबेन कांतिभाई पटेल के हाथो द्वारा भद्रेशभाई तथा शैलेषभाई – नांदोल (दोपहर) प.भ. जिगरभाई जगदीसभाई पटेल (राजपुरवाले)
दि. ०५-०१-२०२२	अ.नि. रसिकलाल नागरदास शाह परिवार – प्रेरक स.गु. स्वामी कृष्णप्रसाददासजी टोरडा महंतश्री
दि. ११-०१-२०२२	प.भ. लताबेन जीतेन्द्रभाई पटेल – असलाली – वर्त ध्रुव पटेल
दि. १४-०१-२०२२	(प्रातः) अ.नि. भीमजी मावजी भूडिया परिवार के साथ (दोपहर) प.भ. मनसुख मावजी वेकरिया परिवार के साथ।
दि. २३-०१-२०२२	प.भ. जयमिन नंदलाल पंचाल – नवावाडज – वर्तमान मे कनाडा
दि. २५-०१-२०२२	प.भ. नारमभाई हरगोविंददास पटेल – कलोल वाले – ह. चि. हर्षदभाई के यहाँ पुत्र तरंग के जन्म पर आस्ट्रेलिया।
दि. २६-०१-२०२२	कुमारी निधि रजनीकांत रमणलाल भावसार – नवा वाडज – वर्तमान कनाडा
दि. ३०-०१-२०२२	प.भ. जगदीशभाई केशवभाई पटेल – राणीप

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि - जनवरी-२०२२

रु।. ७५,०००/-	प.भ. देवारम वेलजी राबडिया तथा पुष्पा देवराम राबडिया – ह. दिक्षित, शीतल तथा शारदा
रु।. ५१,०००/-	प.भ. रामजी वालजी जेसाणी – बलदिया–कच्छ धर्मपत्नी मानबाई
रु।. ५१,०००/-	प.भ. डाह्याभाई नारणदास पटेल, धर्मपत्नि विमलाबेन डाह्याभाई पटेल – अहमदाबाद

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "मन का संकल्प और भगवान के सन्मुख रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग कहते है कि कुसंग से दूर रहना चाहिए। यह एक दूसरी बात है कि जिससे सावधान रहना पडे उसे दुसंग कहा जाता है। दुसंग अर्थात् क्या ? जिसका साथ करने से अपना मनोबल कमजोर बने । ऐसे लोगो से बचना चाहिए। तो इसके लिये क्या करना चाहिए ? मन में नियम रखने के लिये क्या करना चाहिए। सभी वस्तु के नियम होते है ? ऐसे मन का भी नियम होना चाहिए।। जिस प्रकार वाहन चलाते समय ब्रेक और एक्सीलेटर का उपयोग करते है। इससे नियन्त्रण में रखते है। मन तो दिखाई नही देता है। लेकिन मन दौडाता है। इन्द्रियाँ उसी प्रकार से दौडती है । इन्द्रिय दोषी दिखाई देती है । ये विचार सर्व प्रथम मन में आता है। उदाहरणार्थ हम बोलते है कि इस व्यक्ति की जीभ कैची की तरह चलती है। बहुत तीखी है। इसके पीछे क्रिया करने वाला मन है। तो यहाँ पर क्या करना चाहिए ? वहाँ पर मन को संकल्पित करना चाहिए। पहले से निर्धारित करे कि हम सत्संगी है। मैं नरनारायणदेव का आश्रित हूँ। मुझसे यह कृत्य नही होगा । ऐसा 'संकल्प' करना चाहिए । यह कार्य करेगे । यह कार्य नही करेगे । दृढतापूर्वक नही कर सकते है तो भगवान के पास जाना अति कठिन है। इस पर विचार करना चाहिए । हमारे मन को कमजोर बनाने वाले प्रतिदिन मिलते है । जो समाचारपत्र, टी.वी. गाँव के चौपाल में अपने घर में मिलता है। उस समय अपने मन की संकल्पित करके सतकार्यो और संदवृत्तियो में लगाना चाहिए। इससे तकलीफ नही आयेगी। उदाहरण स्वरुप अच्छे आभूषण देखने गये हो और कोई कहे यह अच्छा गहना नही है तो आप फेंक देते है ? किसी का अच्छा घर देखकर अपना घर छोड देते हो । आप की नौकरी आप नही छोडते है । कभी आप से कोई कहे मंदिर जाने से आप को क्या मिला ? तब पुरानी बाते याद आती है ।आप शंका-कुशंका तर्क-वितर्क करने लग जाते है । इस संसार की लौकिक वस्तु किसी के कहने से छोडते नही है तो आप ''अलौकिक'' वस्तु छोडने के लिये क्यो तैयार हो जाते है। नाशवान सुख नही छोडते है । जो सनातन सत्य है । अखंड और अविनाशी सुख मिले तो आप क्यो छोडेगे। यह विचार करने वाली बात है । काल का प्रभाव ऐसा है कि विश्वास, कमजोर हो जाता है। ऐसी अवस्था में आप तैयार हो जाये तो काल का प्रभाव है। लेकिन मन को स्थिर रखना है तो भी जीव को ऐसा होता है। स्वयं की रक्षा करता है। मैं अपनी बुद्धि की प्रेरणा लेकर कार्य कर रहा हूँ। लेकिन प्रबल होता है। अपनी पूरी शक्ति लगाकर संसार को प्रभावित करता है । अपनी बात मनवाने के लिये बुद्धि ऐसा करती है। बुद्धि प्रेरणा देती है । इस आधार पर जीव कार्य करते है । इस समय कलियुग चल रहा है। वह अपना काम करा लेता है। हम समय को रोक नही सकते है । समय रोकने के लिये किसी से कहे आप घडी बंद कर दे तो क्या समय रुक

जायेगा । नही रुकेगा । इस प्रकार काल प्रभाव डालता है । हमे प्रमादी बनाता है । आलसी बना देता है । भगवान से सम्बन्धित प्रमाद आता है । संसार सम्बन्धी विवाह में जाना हो तो दस घंटे दूर हो तो भी जाते है । यदि विवाह में नही जायेगे तो हमारे शुभ काम में कौन आयेगा उस तरह का बहाना बनाकर लोग जाते है । मंदिर मात्र दस मिनट के दूरी पर हो तो भी आलस्य कर जाते है । इसमें अपना स्वार्थ होता है । काल का बहाना मिल जाता है । माया को हमने पकड़ रखा है ।माया ने हमे नही पकडा है । तो उस समय पर क्या करे । काल के भी काल तो भगवान है । उनके सामने हो तो अपना दुर्भाव हट जाता है । वहाँ पर ही मन का संकल्प तथा भगवान को सन्मुख रखना चाहिए । मन को कमजोर नही करना चाहिए । मन से चले या नही चले । यह अपना स्वतंत्र पुरुषार्थ है । कोई कुछ भी कहे । आशा-तृष्णा दिखाई दे तो आप का तथा आपके परिवार का भूतकाल तब सोचे ! प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कई अवसर आता है कि अब सब कुछ समाप्त हो गया है । अब हम फँस गये है । इससे बाहर नही आ सकते है । सारी धन दौलत बेकार हो जाती है । किसी को मानसिक दुःख शारीरिक दुःख, पैसे का दुःख जीवन में आता ही रहता है । फिर भी महाराज इस परिस्थिति से हम सभी को बाहर लाते है । ये हमे आगे नही बचायेगे ? अवश्य रक्षा करेगे । हमे अंत तक यहाँ आये है । हम नरनारयणदेव के चौक में बैठे है । विश्वास रखे । हम अपने चालाक बुद्धि से भवसागर पार नही कर सकते है । वे किसी भी रुप में रक्षा करते है । वे आते ही है । लेकिन हमे पता नही चलता है । संसार विश्वासघात करता है । भरोसा तोडता है । आप का भरोसा नही टूटता है । कुछ समय के लिये संसार से उदासीन हो जाते है । लेकिन स्थायी नही होती है । महाराज प्रति दिन भरोसा दिलाते है । प्रतिदिन बचाते है । महाराज प्रत्यक्ष नही आते है ।क्योकि अपनी योग्यता ही नही होती है । प्रतिदिन अपने साथ रहते है । किसी के बुद्धि में आकर सहायता करते है । महाराज दूसरे के माध्यम से सहायता करते है । यह याद रखे । महाराज किसी न किसी को प्रेरणा देते है । तभी आप की कोई सहायता करता है । तब धन्यवाद तथा प्रार्थना भगवानकी करना चाहिए । भगवान अपनी सहायता करते है । यह हम समझ और पहचान सकते है । ऐसी पवित्र बुद्धि भगवान हम सभी को प्रदान करे ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर खरमास की धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्यमें तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन से प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के प्रसादी के अलौकिक सभा मंडप में प्रातः ६ बजे से ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून हरिभक्तो के विशाल समूह के साथ ठंडी में पूर्ण किया गया । कोरोना काल में सरकार के दिशा निर्देसानुसार सभी लोग मास्क पहनकर धुन किये थे । ३५०० से लेकर ५००० लोग दैनिक धुन में भाग लिये थे । मासिक धुन के यजमानो को पेन ड्राईव में वचनामृत सभा का आख्यान दिया गया था । पूरे महिने युवक और वृद्ध हरिभक्तने प्रसाद की पैकिंग तथा वितरण में भाग लिये थे । महंत स्वामीने इनको पुरस्कार दिये थे । धुन गाने में अपने गायक वृंद के प.भ. पूरव पटेल और ओम सोनी आदि लोग पूरे महिने सर्वप्रथम आकर अलौकिक राग मे धुन गाये थे । (कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा भारत देश के ७३ वे गणतंत्र दिवस को भव्य रुप से मनाये

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा तथा पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से पर्व उत्सव समिटी तथा राधे-राधे ग्रुप गांधीनगर के प्रबन्ध और सहयोग से पर्व के उपलक्ष्य में हमारे देश के ७३ गणतंत्र के दिन ता. २६-१-२२ के दिन १५५१ फुट लम्बा तथा १० फुट चौडे राष्ट्रध्वज के साथ पर्व महोत्सव के पूरे परिसर में एक अद्‌भूत और अलौकिक शौर्य महायात्रा निकाली गयी थी ।

इस प्रसंग पर्व ग्राउन्ड पर प.पू. महाराजश्री सहित धर्मकुल परिवार तथा मुख्य संत-भक्तो के हाथ से ठाकुरजी की आरती होने के बाद यह विशेष महाध्वज जमीन को न स्पर्श करे । सभी लोग उपस्थित हो कर उठाकर तथा लोको के हाथो में छोटे ध्वज राष्ट्र भक्ति के गीत तथा आराध्य देव के भक्ति गीत के साथ पूरे ग्राउन्ड पर धुमकर राष्ट्रगीत गाकर पूरे सन्मान के साथ ध्वज लहराया गया था ।

प्रसंगोचित सभा में नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय स.गु. प्रेमानंद स्वामी कृत नारायण - नरनारायण कीर्तन को प.पू. महाराजश्री के सम्पूर्ण मार्ग दर्शन में विख्यात गायक कलाकार श्री नीरज परीख के मधुर आवाज में स्टुडियो में गवाकर उस पद को पर्व के शीर्षक रुप में आइपेड के द्वारा विमोचन किया गया । तथा प.पू. महाराजश्री के हाथो द्वारा भी नीरजभाई का सन्मान किया गया था । संतो और हरिभक्तो की विशाल सभा श्रीहरि के तीनो अपर रुपो के मुख से आशीर्वचन पाये । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री लक्ष्मीस्वुरपा तथा श्रीराजा के सानिध्य में सुख प्राप्त किये । नास्ता के रुप में प्रसाद व्यवस्था श्री जनकभाई गजेरा (जानकी केटरर्स) यजमान पद पर थे । (गोरधनभाई वी. सीतापर)

जेतलपुरधाम में महिला सत्संग सभा एवम् शाकोत्सव

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री लक्ष्मीस्वरुपाश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से जेतलपुर धाम में ता. १०-१-२२ सोमवार के दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के सानिध्य में दिव्य शाकोत्सव तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस के यजमान पद पर जेतलपुर रेवती महिला मंडल ने सेवा दिया था । प्रातः १० से १२-३० तक सांख्ययोगी बहने सत्य दिशा बताई थी । अंत में प.पू. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद देकर बहनो को खुश की थी । जेतलपुर के समीप गाँव की बहनो ने दिव्य सत्संग का लाभ उठाये थे । प्रसाद के रुप में शाकोत्सव लेकर भाव-विभोर हो गयी थी । सांख्ययोगी बचीबा, नर्मदाबा ने सुंदर प्रबन्ध किये थे ।(रेवती महिला मंडल - जेतलपुर)

माणेकपुर गाँव में समूह होम पूजा

अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर-नारणपुरा) की प्रेरणा मार्गदर्शन से माणेकपुर (चौधरी) गाँव के मंदिर में होम महापूजा का सुंदर प्रबन्ध पूर्ण हुआ । जिस में ९१ हरिभक्तोने भाग लिया था । इस अवसर पर जेतलपुर धाम

से पू.स.गु. शा. पी.पी. स्वामी, महंत स्वामी श्री स.गु. कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी तथा स.गु. राम स्वामी आदि संत मंडलने आकर पूर्णाहुति की थी । तथा आरती किये थे । सभी को आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर २०० जरुरतमंदो को अनाज का वितरण किया गया था । (धर्मनंद स्वामी - जेतलपुर)

विरमगाम मे श्रीमद् भागत पारायण

परकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से विरमगाम में ता. २१-१२-२१ से २-१-२२ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. शास्त्री स्वामी अनुपमस्वरुपदासजी (नारणपुरा मंदिर) के वक्ता पद से और स.गु. स्वामी जगतप्रकासदासजी ने संहिता पाठक वक्ता पद पर अ.नि. कलाबेन जयंतीलाल कांतिलाल के मोक्ष के लिये यहाँ की सांख्ययोगी बहनोके प्रेरणा से तथा गाँव के सभी हरिभक्तो के साथ सहकार से पूर्ण हुआ । इस अवसर पर धामो से आये संत और सांख्ययोगी बहनोने हिस्सा लिया था । सम्पूर्ण प्रसंग की व्यवस्था प.भ. बाबुभाई त्रिकमभाई ठक्कर की सेवा प्रेरणादायी थी ।(शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुर)

बालासिनोर में शाकोत्सव

परकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुरधाम और नारणपुरा मंदिर के मंहत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी के सुंदर प्रेरणा से बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ५-१-२०२२ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर धाम से शा. धर्मनंदन स्वामी, जगतप्रकाशदासजी स्वामी और नारायणपुरा मंदिर से शा. अनुपम स्वामी और अनंतस्वरुप स्वामी आकर हरिभक्तो को कथा वार्ता का लाभ दिये थे । यहाँ के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल महिला ने अच्छी सेवा दिये थे । गाँव के सभी हरिभक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये थे ।(शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुरधाम)

कोठंबा गाँव में शाकोत्सव

परकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुरधाम और नारणपुरा मंदिर के मंहत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी के सुंदर मार्गदर्शन में कोठंबा गांव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ५-१-२२ के दिन सभी हरिभक्त मिलकर भव्य शाकोत्सव मनाये थे । (शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुरधाम)

विजापुर गाँव में श्रीमद् भागवत कथा

सर्वोपरी श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुरधाम और नारणपुरा मंदिर के मंहत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी तथा स.गु. शा. स्वामी प्रभु स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन-प्रेरणा से विजापुर गाँव में ता. ६-१-२२ से १२-१-२२ पर्यन्त श्रीमद् भागवत सप्ताह का कथामृत पान शा.स्वा. अनुपमस्वरुपदासजी (नारणपुरा) संगीतमय वातावरण में किये थे । इस अवसर पर धाम से संत और सांख्ययोगी बहने आई थी । बच्चो द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । पूरे प्रसंग में युवक मंडल और महिला मंडल ने सुंदर सेवा दिये थे । (शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुरधाम)

शेर गाँव में शाकोत्सव

परकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से जेतलपुरधाम और नारणपुरा मंदिर के मंहत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी के सुंदर मार्गदर्शन में विरमगाम, कालीयाणा, ट्रेन्ट, सीतापुर देश के समस्त गाँव द्वारा शेर गाँव में समूह शाकोत्सव ता. ९-१-२२ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से भव्य रुप में मनाया गया । पूरी सभा को प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया । २०० मीटर के खेत में ''पर्व'' लिखकर लोगो का लोकार्पण किये थे । इस लोगो को देखकर अति खुश हुए थे । शाकोत्सव मे हजारो भक्त भाग लिये थे ।(शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुरधाम)

पाटण शहर में शाकोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने हाथो से श्री नरनारायणदेव के २०० वर्ष पूरे हो रहे है । ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री

कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आर्शीवाद से महंत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी के मार्गदर्शन में पाटण शहर में ता. १६-१-२०२२ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । जिस में जेतलपुरधाम से संत आकर कथा सत्संग का लाभ दिये थे । कई हरिभक्त शाकोत्सव का लाभ लिये । (शा. धर्मनंदन स्वामी - जेतलपुरधाम)

मनीपुर गाँव में शाकोत्सव

भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम और नारणपुरा मंदिर के मंहत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी के मार्गदर्शन मे श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर में ता. २-१-२०२२ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस शाकोत्सव के उत्सव में जेतलपुर धाम से स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी, वयोवृध्ध पू. स्वामी श्यामचरणदासजी, ब्रह्मचारी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर ट्रस्टीश्री), शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी, बोपल मंदिर से स्वामी ध्यानप्रियदासजी आदि संत आये थे । सत्संगियो को आशीर्वाद दिये थे । शाकोत्सव के यजमान पद पर प.भ. हर्षदकुमार अमृतलाल ठक्करने लाभ दिया था ।(शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

मेहसाणा में शाकोत्सव तथा सभा

भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव तथा श्री घनश्याम महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाणा में २-१-२०२२ के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर से स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी, सगु. स्वामी नारायणप्रसादासजी (महेसाणा के महंतश्री), स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी, कोठारी स्वामी पूर्णस्वरुपदासजी, स्वामी अखंडस्वरुपदासजी, स्वामी जनमंगलदासजी आदि ने कथा-सत्संग का लाभ दिये । शाकोत्सव के यजमान अ.नि. शिवाभाई वेणीदास पटेल विमल पंप वाले थे । ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १६-१-२०२२ के दिन प.भ. डॉ. नरेन्द्रभाई भावसार ने वृंदावन फार्म में सत्संग सभा का प्रबन्ध किये थे । जिस में जेतलपुरधाम से स.गु. सा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स्वामी धर्मनंदनदासजी, स्वामी जगतप्रकाशदासजी आदि संत आये थे । श्री घनश्याम मंडल द्वारा कीर्तन-धुन तथा संतोने सत्संग का लाभ दिये थे । (शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

लूनावाडा गाँव में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से महंत स्वामी पू. स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के सुन्दर मार्गदर्शन से लूनावाडा गाँव में ता. ९-१-२२ के दिन शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर जेतलपुर से शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी, स्वामी जगतप्रसाशासजी तथा यहाँ के मंदिर के स्वा. हरिकृष्णदासजी ने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । हरि भक्तोने ''पर्व'' उत्सव में अपने सेवा को लिखवाया । (दिनेशभाई का. पटेल ट्रस्टीश्री कालुपुर)

पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा तथा स.गु. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा) की शुभ प्रेरणा से और स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-बापुनगर) और स.गु. महंत शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में निम्न गाँवो में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की २०० घंटे की अरवंड धुन का आयोजन किया गाय था ।

भाटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में भाटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सभी भाई-बहनो ने (हरिभक्तो) समूह में २०० घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून किये थे । (कोठारीश्री - मोटेरा)

पोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

पोरडा श्री स्वामिनारायण पू. स्वामी श्री जानकीवल्लभदासजी, पू. धर्मस्वरुप स्वामी आदि संत मंडल

और पोरडा गाँव के सभी हरिभक्तोने मिलकर २२१ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र के धून की किये थे । (कोठारीश्री - पोरडा)

कपडवंज श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहा कपडवंज श्री स्वामिनारायण मंदिर में पोरडा के संत की प्रेरणा से गांव के सभी हरिभक्त के साथ अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून कि गई थी ।(कोठारीश्री - कपडवंज)

आंत्रोली श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आंत्रोली श्री स्वामिनारायण मंदिर में २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून कि गई थी । जिसमें गाँव के सभी हरिभक्त भाग लिये थे (कोठारीश्री - आंत्रोली)

कठलाल श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने 'पर्व' महामहोत्सव के उलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर में कठलाल गांव में सभी हरिभक्त मिलकर २०० घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून किये थे । (कोठारीश्री - कठलाल)

तीर्थ भूमी श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आँगन में ५५१ घंटे की धुन तथा २ करोड श्री स्वामिनारायण महामंत्र की आहुति

श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से और स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा, स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से श्री विपुलभाई मनसुखभाई ठक्कर के संचालन में युवक मंडल के सहयोग से आगामी पर्व के उपलक्ष्य में ता. १६-१२-२१ से १६-१-२२ को प्रातः से शायंतक यज्ञ तथा रात्रि में धुन, प.भ. श्री अरविंदभाई रवजीभाई दोंगा परिवार ह. शालीन तथा अ.नि. कमलाबेन गजाननभाई जादव परिवार के यजमान पद पर हुआ था ।

श्री नरनरायणदेव की प्रागट्य भूमि श्री नारायणघाट के आँगन में धुन का प्रारम्भ अखंड दीप प्रागट्य तथा आरती से हुआ था । धुन के होल में बोरडी के वृक्ष के नीचे बद्रीपति श्री नरनारायण भगवान को विराजमान करके बद्रिकाश्रम के दिव्य वातावरण में संतो के सानिध्य में अहमदाबाद तथा गाँव-गाँव से २३० धुनमंडल, ११७०० भक्तजन, ८० से अधिक सांख्ययोगी बहने आकर अवसर का दिव्य लाभ उठाया था । अ.सौ.प.पू. गादीवाला लक्ष्मीस्वरुपश्री तथा पू. बड़े गादीवालेश्री आकर असवर की पूर्णता किये थे । संत और भक्त धुन के साथ रासोत्सव को उमंग-उल्लास से दिव्य वातावरण बना था ।

आहुति यज्ञ में ४२ जितने विद्वान भूदेव यजमान परिवार के साथ रहकर महामंत्र की आहुती दिये थे । पूरे असवर के बीच यजमान परिवार के तरफ से रसोई की व्यवस्था की गई थी । पूर्णाहुति संत-मंडल द्वारा हुई ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अहमदाबाद के पूरव विस्तार के मंदिरो का संयुक्त शाकोत्सव उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (बापूनगर) तथा महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन तथा महंत शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (बापुनगर) और सत्संग समाज के आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर, हर्षदकोलोनी, कर्मशक्ति पार्क, नरोडा आदिश्वरनगर, निकोलगाम, विराटनगर तथा हीरावाडी और निकोल-नरोडा सत्संग मंडल के संयुक्त उपक्रम से प.भ. श्री घनश्यामभाई जी. पटेल (विहारवाले) मुख्य यजमान पद तथा यशस्वी हरिभक्त यजमान पद से ता. २-१-२२ रविवार के दिन पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में शुकन चार रस्ता के पास विशाल ग्राउन्ड में प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा साग वघार कर दिव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में और कालुपुर, गांधीनगर, नारायणघाट कोटेश्वर, धोलका, कलोल, भुज, उनावा, नरोडा इत्यादि धामो से आये अधिक संख्या में ब्रह्मनिष्ठ संत-महंतो की उपस्थिति में श्री जयेशभाई सोनी द्वारा एक कीर्तन और महंत पू.शा. स्वामी निर्गुणदास आदि विद्वान संतो द्वारा प्रवचन सभी लोगोने दो घंटे तक सत्संग का लाभ उठाये थे । यजमान श्री तथा राजद्वारी महानुभावो को प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथो से सन्मान किया गया था । बाद में लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये थे । सभी ११००० भक्तजन दिव्य शाकोत्सव का लाभ लिये थे । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर (गांधीनगर) २०० घंटे की अखंड धुन के साथ प्रभात फेरी

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री

के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कोटा) और स.गु. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन में पोर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में गाँव के सभी हरिभक्त साथ मिलकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र का २०० घंटे तक धुन एवम् गाँव में प्रभात फेरी की गई थी । ६-१-२२ के दिन संतो-हरिभक्त ठाकुरजी की आरती करके धुन पूर्ण किये थे ।(कोठारी हरिभाई)

पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य माणसा मंदिर द्वारा अखंड महामंत्र धुन एवं यात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की कृपा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा के महंत शास्त्री स्वामी धर्मकिशोरदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में माणसा से जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा मंदिर, और बामरोली मंदिर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन लक्सरी बस द्वारा दर्शन का प्रबन्ध किया गया था ।(कोठारीश्री माणसा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शहेरा शाकोत्सव-कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० पाटोत्सव 'पर्व' महामहोत्सव के उफलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी तथा स.गु. महंत ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से शाकोत्सव एवम् श्रीमद् भागवत कथा ता. ३०-१२-२१ से २-१-२२ तक स्वामी हरिस्वरुपदासजी के वक्ता पद से हुई थी । लुनावाडा से सांख्ययोगी बहने आकर महामंत्र धुन की थी । खर मास उल्लास पूर्वक मनाया गया था । उत्तरायण हेतु ६ घंटे धुन की गई थी । (कोठारीश्री राघेश्यामभी शहेरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर खर मास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से गोमतीपुर में सभी हरिभक्त खरमास में प्रातः संगीत सुर के साथ श्रीस्वामिनारायण महामंत्र धुन किये गये थे । (कोठारी मुकेशभाई)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

"पर्व" महामहोत्सव के उपलक्ष्य में वांकानेर में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के कृपा से स.गु. शा. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् अ.नि. प.भ. परसोतमभाई श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर में ता. ९-१-२२ के दिन शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर मूली के स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी, ज्ञान स्वामी तथा चरडावा, रतनपर और लिम्बडी के संत कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।(जे.के. स्वामी - वांकानेर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ चौथा पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् सम्पूर्ण धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से रणजीतगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर का चौथा पाटोत्सव में २३-१२-२१ से २७-१२-२१ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण शा. स्वा. धर्मजीवनदासजी तथा शा. स्वा. सत्यवंदनदासजी के वक्तापद से हुई थी । धामो से आये संत और हरिभक्त थे । यहाँ के संतो के मंडल द्वारा पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में जरुरमंतो को चप्पल, कम्बल, दवा का निःशुल्क वितरण किया गया था ।(अनिल दूधरेजिया)

अक्षरवास

वडनगर : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के वयोवृद्ध संत स.गु. स्वामी श्रीहरिप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वा. भक्तिवल्लभदासजी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में काफी समय से भगवान की भजन-कीर्तन करते थे । इनका दिनांक २-१-२०२२ माध वद अमावास्या के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए ।

कालुपुर - अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के स्वामी विजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवचरणदासजी (वे.व्या. आचार्य) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

कालुपुर - अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व कोठारी स.गु. स्वामी जयकृष्णदासजी (जे.के. स्वामी) गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कमेटी सभ्यश्री) पोष सुद-११ एकादशी ता. १३-१-२०२२ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

मागसर सुद-१ प.भ. लक्ष्मीबेन मनुभाई ठक्कर (अमदावाद), प.भ. पटेल कनुभाई मथुरभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. बळदेवभाई गांडाभाई पटेल (राजपुर), प.भ. अशोकभाई एल. दवे (अमदावाद), प.भ. मयुरभाई सोनी (लंडन). **मागसर सुद-३** प.भ. रोहनकुमार हसमुभाई पटेल (आणंद), प.भ. रमणभाई नाथाभाई पटेल (सिमरडा), प.भ. डॉ. दिपकभाई जगदीशचंद्र लींबाचीया (अमदावाद), अ.नि. ललीताबेन अंबालाल पटेल (छत्राल), अ.नि. नारायणभाई अरजणभाई पटेल (अमदावाद). **मागसर सुद-४** प.भ. पटेल कुलदीप मनहरभाई पटेल (आंत्रोली), प.भ. कामदार मयंक विरेनभाई (पोरबंदर). **मागसर सुद-७** अ.नि. गंगारामभाई शंकरभाई प्रजापति (खेरोल), प.भ. खीमजी हरजी भुवा (सुपर-कच्छ). **मागसर सुद-८** प.भ. धर्मेन्द्रभाई नारणभाई मावाणी (लींबडा-हनुमान). **मागसर सुद-९** अ.नि. शारदाबेन हंसराजभाई पटेल (रणछोडपुरा), प.भ. पटेल धर्मेन्द्रभाई घनश्यामभाई (महादेवनगर), प.भ. शारदाबेन रमेशभाई ईश्वरदास (न्यु राणीप), अ.नि. हर्षदभाई भाईलालभाई परी (अमदावाद). **मागसर सुद-१०** चि. मौलिक नरसिंहभाई नसीत (लग्न प्रसंगे) (अमदावाद), अ.नि. नवीनचंद्र व्रजलाल लालाणी (जामनगर), श्री स्वामिनारायण मंदिर सरधार मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंगे. **मागसर सुद-११** (एकादशी) श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ. प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर). **मागसर सुद-१२** प.भ. हर्षदभाई केवळभाई पटेल (थोरीमुबारक), प.भ. अपन पटेल अ.नि. मृणालीबेन नारणभाई पटेलनी पुण्यतिथि निमित्ते (अमदावाद), अ.नि. विनोदभाई रणछोडभाई मीस्त्री (अमदावाद), प.भ. चौधरी रणछोडभाई कानजीभाई (बालवा), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. धर्म बिन्देश पटेल तथा कियान बिन्देश पटेल (गांधीनगर), प.भ. अंबालालभाई बाभाईदास पटेल (गवाडा), प.भ. पटेल पुष्पाबेन बाबुलाल (पलीयड), प.भ. पटेल शोभनाबेन भरतकुमार (अमदावाद), प.भ. हिराणी मनजी शिवजी (नारायणपर-कच्छ). **मागसर सुद-१३** प.भ. पटेल केशवीबेन विजयभाई (राणीप). **मागसर सुद-१४** प.भ. पटेल हिराबेन (अमदावाद), प.भ. पिंडोरीया देवराज जादवा (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. पटेल जगदीशभाई कनुभाई (हाथपाळीया), प.भ. अश्विन रतीलाल पारे (अमदावाद), चि. ऋतुना लग्न प्रसंगे. **मागसर सुद-१५** प.भ. राजेश्वरीबेन मनोजभाई ब्रह्मभट्ट (अमदावाद), प.भ. ठक्कर बाबुभाई त्रिकमलाल (विरमगाम).

मागसर वद-१ प.भ. लाणी शामजी लालजी (बळदीया-कच्छ), अ.नि. स्वामी विजयप्रकाशदासजी गुरु अ.नि. स्वामी देवचरणदासजी(कालुपुर मंदिर), अ.नि. स्वामी विजयप्रकाशदासजी ह. प.भ. गोविंदभाई पटेल (ईटादरा), अ.नि. स्वामी विजयप्रकाशदासजी ह. प.भ. बिपिनभाई नागरभाई पटेल (कडी), प.भ. मेधबाई विश्राम प्रेमजी धानाणी (सुपर-कच्छ). **मागसर वद-२** प.भ. मावजी रामजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. हिरलबेन अमरकुमार पटेल (कनीज), प.भ. प्रेमीलाबेन नितिन मावजी वेकरीया (मीरजापर-कच्छ), प.भ. अंबालाल शंकरदास पटेल (कल्याणपुरा-माणसा). **मागसर वद-३** अ.नि. रमणभाई बेचरभाई पटेल (पीज), अ.नि. सुधाबेन कनुभाई शाह (भावनगर), प.भ. वसंतभाई भावेशभाई भट्ट (अमदावाद), अ.नि. कपिलाबेन रमणीकलाल परमार (अमदावाद). **मागसर वद-४** प.भ. माणेकभाई शंकरलाल पटेल (मोसण), अ.नि. हिरजीभाई विरजीभाई वरसाणी (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. संजयभाई विश्राम (नारायणपर-कच्छ). **मागसर वद-५** प.भ. गीताबेन हरजीभाई (भुज-कच्छ), अ.नि. रामजी कुंवरजी वेकरीय (मांडवी-कच्छ), अ.नि. तेजबाई रामजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ). **मागसर वद-६** अ.नि. रमीलाबेन जयंतीभाई पटेल (गवाडा), प.भ. पटेल बळदेवभाई झीणाभाई (डेरावपुरा), प.भ. अंकित घनश्यामभाई पटेल (सुरेन्द्रनगर), अ.नि. व्रजलाल रूपचंद गोळवाळा (अमदावाद), अ.नि. जसुबाई प्रेमजी डबासीया (कोडकी-कच्छ), प.भ. चिंतन पटेल (अमदावाद), ट्रेन्ट सीतापुर विरमगाम देश श्री नरनारायणदेव पदयात्रा निमित्ते पू. स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी **मागसर वद-७** अ.नि. सुमनभाई मणीभाई पटेल (उनावा), प.भ. दिलीपसिंह केशुजी सोलंकी दरबार (ओढव), प.भ. पटेल लक्ष्मणभाई शिवाभाई (अमदावाद), अ.नि. रूपाबेन शांतिभाई स्वामिनारायण (सुरत), प.भ. दिनेशभाई दोंगा (सुरत), श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार पदयात्रा निमित्ते, अ.नि. जसुभाई प्रेमजी डबासीया (कोडकी-कच्छ), श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी पदयात्रा निमित्ते. **मागसर वद-८** प.भ. भरतसिंह दोलतसिंह वाघेला (अमदावाद), प.भ. दिनेशभाई पोपटलाल सोनी (सुरत), प.भ. प्रजापति अल्पेश अमृतभाई (महेसाणा). **मागसर वद-९९** प.भ. लालजी कानजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), अ.नि. सिल्की बिन्देशभाई पटेल (गांधीनगर). **मागसर वद-१०** अ.नि. स.गु. पुराणी स्वामी गोविंदप्रियदासजी (जुनागढ) **मागसर वद-११** (एकादशी) अ.नि. कांतिभाई जेणाभाई पटेल (धमासणा), प.भ. विरचंदभाई भावसार (अमदावाद). **मागसर वद-१२** प.भ. कमलेशभाई अनीलभाई प्रजापति (कलोल), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (कच्छ-भुज). **मागसर वद-१३** प.भ. वर्षाबा किरीटसिंह वाघेला (गरोडीया), प.भ. ठाकोरभाई देसाईभाई पटेल (बोरेडी), प.भ. शोभन दिनेशभाई पटेल (राणीप), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. कुंदनबेन जयंतीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. मान्या जय पटेल (अमदावाद), प.भ. परसोतमभाई मणीभाई पटेल (मोसण), प.भ. पानसुरीया विश्वेश जीतेन्द्रभाई (गांधीनगर), प.भ. पटेल आशिष भोगीलालभाई (एटलान्टा), अ.नि. सुंदरबेन हरजी वेलजी पिंडोरीया (माधापर-कच्छ). **मागसर वद-१४** प.भ. हरिलाल वेलजी वरू (सुरत), अ.नि. लक्ष्मण जेठा वरसाणी (कच्छ-भुज), अ.नि. नारायण प्रेमजी हालाई (कच्छ-भुज). **मागसर वद-३०** प.भ. जयेशभाई कनुभाई पटेल (निकोल), प.भ. मनसुभाई नाथाभाई पटेल (निकोल), प.भ. ईश्वरसिंह पारानजी चौहाण (टांकीया), प.भ. श्रीवास्तव गीरीशचंद्र एस. (अमदावाद), अ.नि. अवनिकाबा कृष्णसिंह डाभी (सोजा), प.भ. पटेल हसमुभाई सोमदास (मारूसणा), प.भ. अमृतभाई प्रहलादभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. दशरथभाई विहाभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. मनजीभाई विश्राम वरसाणी (बळदीया-कच्छ), अ.नि. अरविंदभाई जीवणभाई पटेल (अमदावाद)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

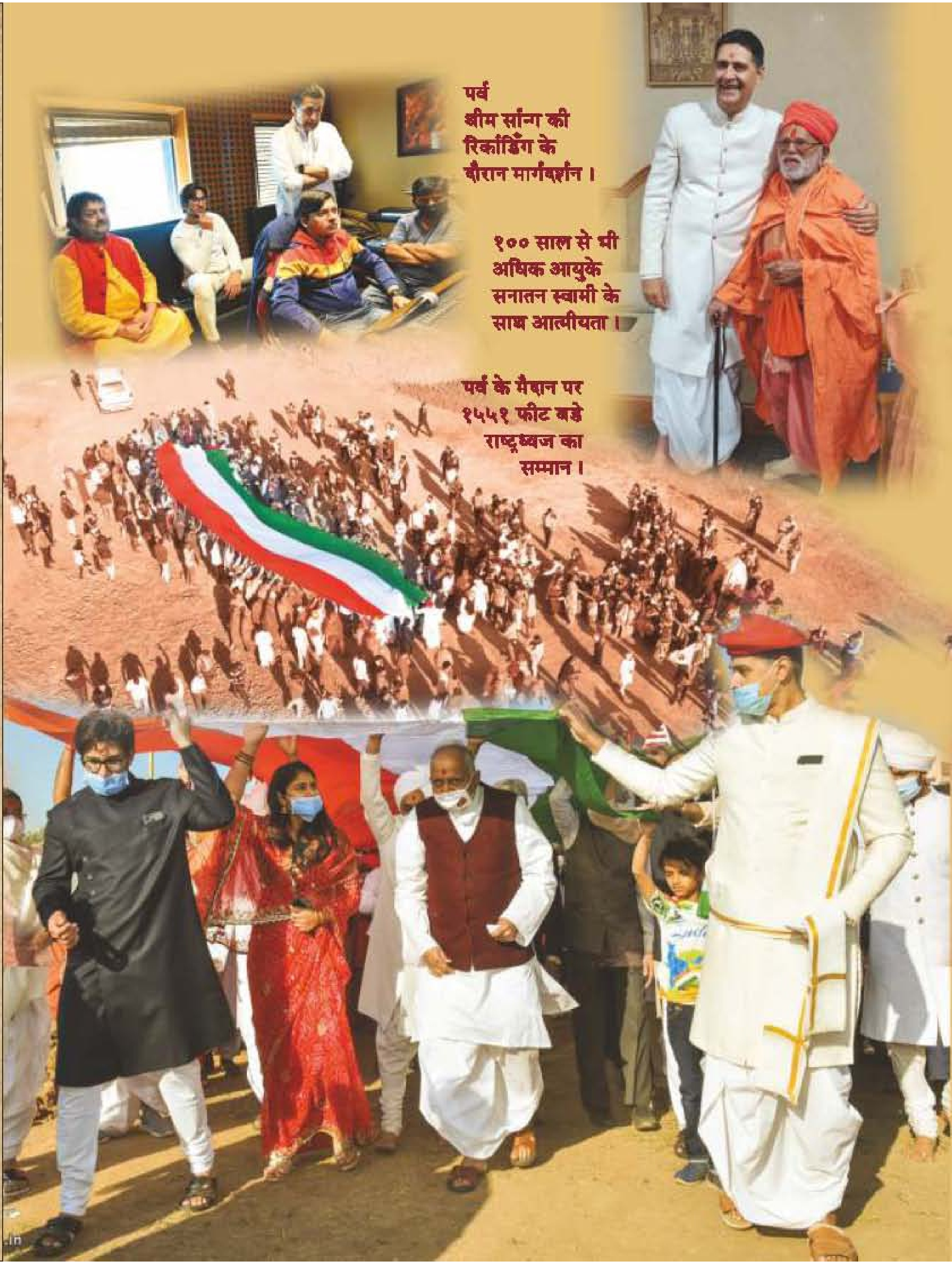

पर्व
थीम सॉन्ग की
रिकॉर्डिंग के
दौरान मार्गदर्शन।

१०० साल से भी
अधिक आयुके
सनातन स्वामी के
साथ आत्मीयता।

पर्व के मैदान पर
१५५१ फीट बड़े
राष्ट्रध्वज का
सम्मान।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

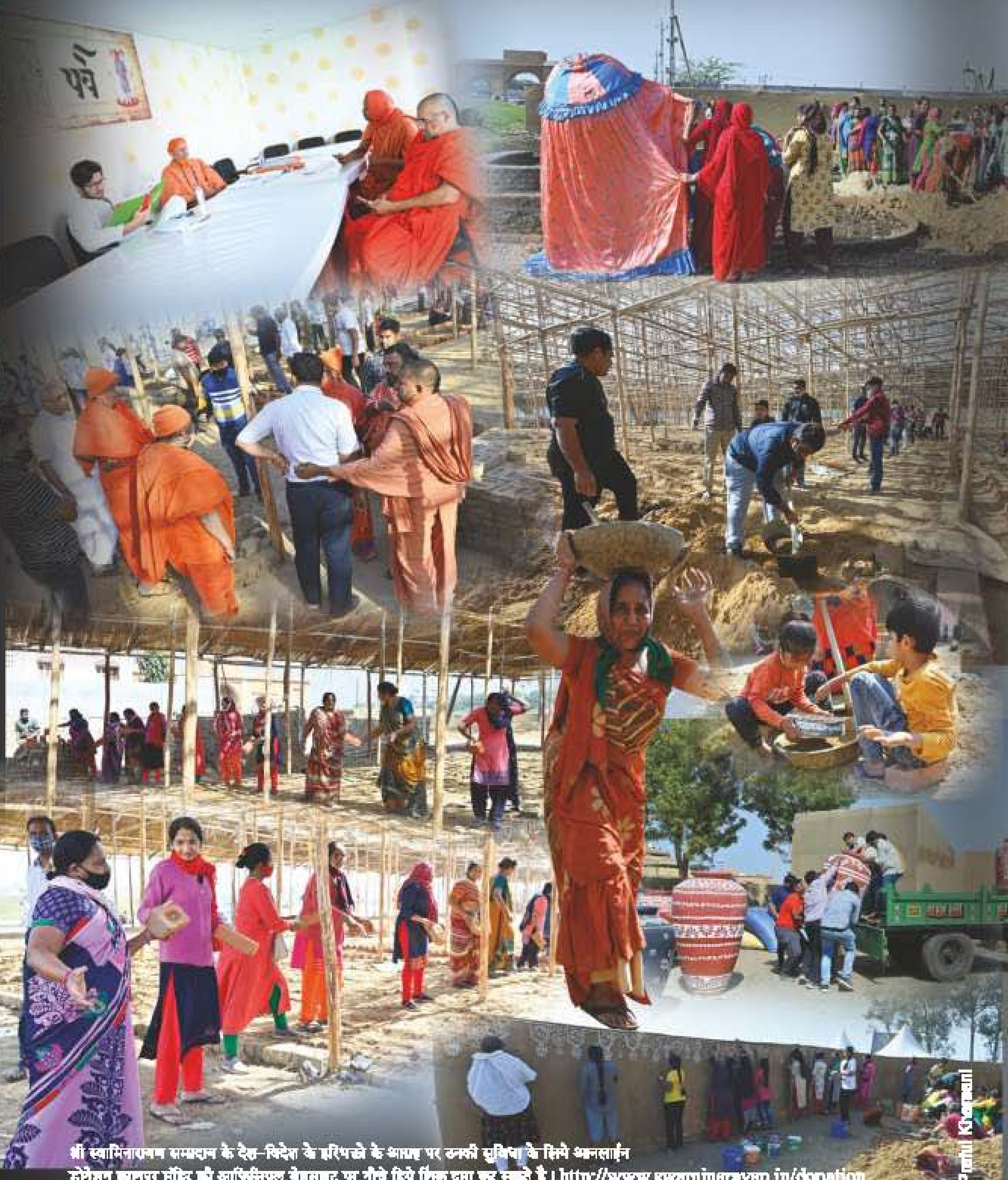

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तों के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन
डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है। http://www.swaminarayan.in/donation